



Review Article

भारत परमाणु गाथा: परमाणु परीक्षण तथा परमाणु नीति

डॉ. अल्माज जहान
राजनीति विज्ञान विभाग,
डी.ए.वी. पीजी कॉलेज बुलंदशहर

सारांश

नागरिक परमाणु ऊर्जा सहयोग पर भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच हुई संधि समग्र राष्ट्र में बहस का मुद्दा रहा था। इस बहस को राष्ट्र की जनता देख रही थी। प्रधानमंत्री के अमेरिका दौरे और 18 जुलाई, 2005 को जारी संयुक्त विज्ञप्ति ने करार की प्रक्रिया की शुरुआत की थी। पं० जवाहर लाल नेहरू के दूरदर्शी नेतृत्व ने पचास के शुरुआती दशक में परमाणु ऊर्जा के कार्यक्रम की आधारशिला रखी थी। उन्होंने भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा एवं उनकी विशिष्ट टीम को सभी आवश्यक मदद मुहैया करायी थी। शुरुआत से ही, नेहरू जी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि भारत का परमाणु कार्यक्रम शान्तिपूर्ण तथा ऊर्जा सुरक्षा के लिए समर्पित होगा। इस बिन्दु पर यह कहना आवश्यक होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग इस कार्यक्रम का एक अभिन्न हिस्सा है तथा पहला परमाणु ऊर्जा केंद्र अमेरिकी सहयोग से वर्ष 1963 में तारापुर में स्थापित किया गया था। 12 राजस्थान व तमिलनाडु के परमाणु रिएक्टर कनाडा के सहयोग से लगाये गये थे। इस दौरान भारत के रूस, फ्रांस व अन्य देशों के साथ सम्बन्ध प्रगाढ़ हुए। इससे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि हुई।

Copyright©2019, डॉ. अल्माज जहान This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

परिचय

अक्टूबर 1964 में चीन द्वारा किए गये परमाणु विस्फोट के कारण गम्भीर सुरक्षा चिन्तायें बढ़ी जिसकी वजह से परमाणु सौंच में बुनियादी बदलाव आया था। वर्ष 1968 में पांच परमाणविक अस्त्र वाले देश-संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस तथा चीन ने एकजुट होकर नाभिकीय अप्रसार संधि (एन.पी.टी) पर दस्तखत किए। इन परमाणु अस्त्र सम्पन्न पांच देशों ने परमाणु मामले में अपने पास सारे अधिकार सुरक्षित कर लिए। दूसरे सभी देशों के लिए इन परमाणु अस्त्र सम्पन्न पांच देशों ने यह व्यवस्था दे डाली कि परमाणु सहयोग अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा उपायों द्वारा नियंत्रित

होंगे। फलस्वरूप सारा संसार 'परमाणु-युक्त एवं परमाणु-विहीन' क्षेत्र में बंट गया ।। भारत ने इस पक्षपातपूर्ण नाभिकीय अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। भारत के सुरक्षा हितों के मद्देनजर यह एक सैद्धान्तिक कदम था। जिसने परिस्थितियों की मांग के अनुरूप हमारे परमाणु विकल्प को जीवित रखा। मई, 1974 में भारत ने राजस्थान के पोखरण में एक शान्तिपूर्ण परमाणु परीक्षण किया। दुर्भाग्यवश, विश्व ने एकतरफा कार्यवाही करते हुए परमाणु ऊर्जा सहयोग को अकस्मात बंद कर दिया। भारत अपने वैज्ञानिकों के साथ खड़ा रहा। जिन्होंने देशी संसाधन और तकनीक के द्वारा स्वायत्त परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को जारी रखने की चुनौती को स्वीकार किया। अमेरिका की

पहल पर 45 देशों का परमाणु आपूर्ति समूह बना, जो नाभिकीय कच्चा माल और तकनीक के अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय पर नियंत्रण रखने लगा था। इसका विपरीत असर भारत जैसे देश के परमाणु कार्यक्रम पर पड़ा। मई 1998 में भारत ने पोखरण में 5 परमाणु परीक्षण किए और दुनिया को बताया कि उसके पास परमाणु अस्त्र हैं।

भारत ने अपने निकट पड़ोसियों के द्वारा सशस्त्रीकरण एवं परमाणु प्रसार से उत्पन्न रणनीतिक मजबूरियों की वजह से यह किया था। भारत को परमाणु सक्षम बनाने का श्रेय देश के वैज्ञानिकों के निरंतर शोध व विकास को जाता है। यह उन वैज्ञानिकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता भी था। जिन्होंने तीन दशकों तक लगे कठोर प्रतिबंधों के बावजूद लगातार कड़ी मेहनत की और उस तकनीक को हासिल किया। पोखरण-2 परीक्षण के चलते भारत ने भविष्य के परमाणु परीक्षणों के संदर्भ में स्वैच्छिक एकतरफा रोक तथा शपहले प्रयोग न करने⁷ के परमाणु नीति की घोषणा करते हुए दुनिया को आश्वस्त कराया कि यह परीक्षण विश्वसनीय न्यूनतम क्षमता एवं रक्षात्मक है। किसी विरोधी द्वारा परमाणु आक्रमण से स्वयं को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से किया गया है। भारत एक विश्वसनीय परमाणु अस्त्र कार्यक्रम को जारी रखने के लिए वचनबद्ध है। जबकि इसके साथ-साथ परमाणु अस्त्र सम्पन्न पड़ोसी देशों के साथ परस्पर विश्वास निर्माण के प्रयासों को भी आगे बढ़ाने की प्रक्रिया को गतिशील बनाएगा। भारत अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु निशस्त्रीकरण और परमाणु अस्त्रों से मुक्त विश्व व्यवस्था को विकसित करने में नेतृत्वकारी भूमिका अदा करेगा। साथ ही भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए अपनी

प्रतिबद्धता को उजागर एवं जारी रखेगा। जिसमें ऊर्जा के सभी महत्वपूर्ण स्रोतदृजल, कोयला, तेल, परमाणु तथा नवीकरणीय ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत अमेरिका के बीच हुए नागरिक परमाणु ऊर्जा करार को इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिये। इसका प्राथमिक उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यधारा से भारत के एकाकीपन को समाप्त करना तथा देश को इस योग्य बनाना है कि वह परमाणु शोध एवं प्रौद्योगिकी के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में पूरी भागीदारी निभा सके।

परमाणु आपूर्ति कर्ता समूह के द्वार खोलने के लिए तथा सभी देशों विशेषकर अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका आदि से परमाणु ईंधन व प्रौद्योगिकी हेतु सम्बन्धों में वृद्धि के लिए भी इस प्रकार की सोच आवश्यक थी। परमाणु ऊर्जा के द्वारा ही वर्ष 2020 तक 20,000 मेगावाट ऊर्जा सृजित करने के लिए अधिक परमाणु रिएक्टर स्थापित करने के भारत के प्रयास को गति प्राप्त हो सकती है। यह भारत के कुल ऊर्जा उत्पादन का 10 फीसदी तक हो सकता है।

भारत की ऊर्जा आवश्यकता, उसकी बढ़ती जनसंख्या व उसकी आर्थिक व औद्योगिक वृद्धि को देखते हुए बहुत अधिक है। इसलिए भारत के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक समग्र व दूरगामी दृष्टि के साथ काम करे। आज समूचा विश्व ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के दौर से जूझ रहा है दृष्टि 10 ऐसे में परमाणु ऊर्जा का अधिकाधिक महत्व है। क्योंकि वह स्वच्छ होती है। निःसन्देह, जब से भारत में थोरियम का संसार में सबसे बड़ा भंडार मिला है। तब से भारत में

परमाणु ऊर्जा का महत्व अधिकाधिक बढ़ गया है। इसके तीन चरणों के परमाणु कार्यक्रम का अन्ततः उद्देश्य भी थोरियम ईंधन को परमाणु ऊर्जा सृजन के लिए उपयोग में लाना है। यह जानना आवश्यक है कि उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत को अधिक यूरेनियम ईंधन रिएक्टरों की जरूरत है। हालांकि भारत में यूरेनियम की खानें हैं, पर यह भी सच है कि भारत के अपने भंडार सीमित ही हैं।

नागरिक परमाणु ऊर्जा करार भारत को विशेष महत्व देते हुए एक खास श्रेणी में रखता है। एक ऐसी श्रेणी जहां पर एक राष्ट्र के पास अमेरिका की तरह परमाणु तकनीक उपलब्ध है और जहां दोनों साझेदारों का बराबर का लाभ व हित है। यह परमाणु भेदभाव समाप्त करने का शुरुआती कदम है जिसने हमारे परमाणु शोध एवं विकास को तथा हमारी आर्थिक समृद्धि के लिए आवश्यक ऊर्जा सृजन की खाहिश को जंजीरों में जकड़ा हुआ था। हमारे किसानों को पम्पसेट के द्वारा खेत सींचने के लिए बिजली की जरूरत है। हमें यह भी याद रखना है कि देश के अधिकांश ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों के घरों और उनकी जिन्दगी को भी रोशन करना है।

इसलिए एक जिम्मेदार राष्ट्र ने अपनी जनता की उचित आवश्यकताओं को देखते हुए एक कारगर एवं सही कदम उठाया है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह करार दो संप्रभु राष्ट्र अमेरिका तथा भारत के बीच हुआ है। भारत बराबर का साझीदार है। सरकार ने बातचीत को अभूतपूर्व ढंग से पारदर्शी बनाया है जिसे संसद के दोनों सदनों में तीन चर्चाओं द्वारा रेखांकित किया गया। प्रधानमंत्री डॉ.

मनमोहन सिंह ने सहयोगी दलों तथा विपक्ष द्वारा व्यक्त आशंकाओं को ध्यान में लेते हुए बिन्दुवार प्रत्येक आक्षेप का स्पष्टीकरण दिया। सरकार ने स्पष्ट रूप से विश्वास दिलाया कि करार परिभाषित मापदंडों के दायरे में है। यह, प्रक्रिया को पुनरारंभ करने, सामरिक महत्व के ऊर्जा भंडार सृजित करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सहयोग की, भारत को पूरी गारण्टी देता है। किसी भी बात पर भारत पीछे नहीं हटा है तथा सभी बातों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। वर्तमान करार हमारे रणनीतिक परमाणु कार्यक्रम, हमारे त्रिस्तरीय स्वदेशी परमाणु कार्यक्रम तथा हमारी शोध व विकास की स्वायत्तता की कीमत पर नहीं किया गया है।

संदर्भ सूची

1. INDO-U.S. CIVIL NUCLEAR DEAL - hari sud, niraj kumar, nam chamski, prem shukla, dev datta, anil raghuraj, alok tomar, &, ATLANTIC, 2007
2. INDO-U.S. CIVIL NUCLEAR DEAL EDITED BY RAHUL BHONSLE, VED PRAKASH AND K.R. GUPTA. NEW DELHI, ATLANTIC, 2007, 1 VOLS., XXVIII, page all
3. भारत के परमाणु परीक्षण तथा उसकी परमाणु नीति, नार्दन बुक सेंटर नई दिल्ली 1992 ISBN 8172110316, 9788172110314 Page 39,40,43,221, 229
4. परमाणु गाथा, डा० सुनील जोगी, डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०, नई दिल्ली ISBN 978-81-288-12187 पृष्ठ 80,89

5. India, US reach understanding on 123 Agreement 21 Jul 2007 the times of india new delhi
6. परमाणु करार के खतरे, महाश्वेता देवी. —अरुन कुमार त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पेज 69,70,71,72
7. भारत का दूसरा परमाणु परीक्षण: हिंदी समाचार पत्रों का सर्वेक्षण, वीरेंद्र कुमार चौधरी, अकादमिक प्रतिभा प्रकाशक नई दिल्ली, 2006 the University of Michigan page 73–86
8. परमाणु गाथा, डा० सुनील जोगी, डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०, नई दिल्ली ISBN 978–81–288–12187 पृष्ठ 80,89,
9. INDO&U-S- CIVIL NUCLEAR DEAL EDITED BY RAHUL BHONSLE, VED PRAKASH AND K.R. GUPTA. NEW DELHI, ATLANTIC, 2007, 2 VOLS., XXVIII, page all
10. पर्यावरण अध्ययन, डा० दयाशंकर त्रिपाठी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिकेशंस नई दिल्ली 2007, ISBN 8120827503, 9788120827509 पृष्ठ 38,39
11. परमाणु उर्जा (Hindi Version of: Atomic Energy) इगोन लार्सन एवं धीरेंद्र अग्रवाल, आत्माराम एंड संस नई दिल्ली 2008 ISBN 8179010406, 9788179010402,